This question paper contains 7 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **4461**

Unique Paper Code : **205455** **C**

Name of the Paper : **Aadhunik Kavya**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. द्विवेदी-युग की कविता की मुख्य विशेषताओं का परिचय दीजिए । 15

अथवा

प्रयोगवादी कविता की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

2. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 12

(*i*) 'यशोधरा' के काव्य-रूप पर विचार कीजिए ।

(*ii*) 'यशोधरा' के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की नारी भावना पर विचार कीजिए ।

(*iii*) नरेश मेहता रचित 'महाप्रस्थान' की मूल समस्या पर प्रकाश डालिए ।

(*iv*) 'महाप्रस्थान' आज भी एक प्रासंगिक रचना है । सोदाहरण विवेचन कीजिए ।

(*v*) दिनकर के 'कुरुक्षेत्र' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

(*vi*) 'कुरुक्षेत्र' के युधिष्ठिर के विचारों को रेखांकित कीजिए ।

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** काव्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10

अब कठोर हो वज्रादपि ओ कुसुमादपि सुकुमारी
आर्यपुत्र दे चुके परीक्षा अब है मेरी बारी
मेरे लिए पिता ने सबसे धीर वीर वर चाहा
आर्यपुत्र को देख उन्होंने सभी प्रकार सराहा
फिर भी हटकर हाय वृथा ही उन्हें उन्होंने थाहा
किस योद्धा ने बढ़कर उनका शौर्य-सिंधु अवगाहा ?
क्यूँ कर सिद्ध करूँ अपने को मैं उन नर की नारी ?

अथवा

मेरे रूप रंग यदि तुमको अपना गर्व रहा है,
तो उसके झूठे गौरव का तुमने भार सहा है,
तू परिवर्तनशील उन्होंने कितनी बार कहा है
फूला दिन किस अन्धकार में डूबा और बहा है ?

अथवा

क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो
उसको क्या जो दंतहीन
विषरहित विनीत सरल हो ।

अथवा

मगर यह शांतिप्रियता
रोकती केवल मनुज को
नहीं यह रोक पाती है
दुराचारी दनुज को
दनुज क्या शिष्ट मानव को
कभी पहचानता है
विनय को नीति कायर की
सदा वह मानता है

अथवा

राज्य के
अकूत शक्ति-संपन्न होने का अर्थ ही है
व्यक्ति का स्वत्वहीन होना
राज्य की गरिमा को
व्यक्ति की गरिमा का पर्याय होने दो
किसी भी व्यवस्था का
व्यक्ति से बड़े हो जाने का अर्थ होगा
अमानवीय तंत्र !!

अथवा

अर्जुन !

अपने वैचारिक स्वत्व को

किसी का भी दास मत होने दो

स्वयं का भी !

यदि वैचारिकता की अग्नि

स्वयं तुम्हें झुलसाने लगे

तब भी उसे वहन करें

जैसे वृक्षपत्र

अंगारे को अपनी हरीतिमा सौंपने पर भी

दाहकता वहन करता है

वहन करो ।

4. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×8=24

(*i*) भारतेंदु हरिश्चंद्र की कविताओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

(*ii*) जयशंकर प्रसाद के 'आँसू' की काव्यगत विशेषताओं की चर्चा कीजिए ।

(*iii*) निराला की कविता 'वह तोड़ती पत्थर' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए ।

(*iv*) सुमित्रानंदन पंत की कविता 'नौका विहार' के प्राकृतिक सौन्दर्य को रेखांकित कीजिए ।

(*v*) महादेवी वर्मा की कविता 'मैं नीर भरी दुख की बदली' के कथ्य की विवेचना कीजिए ।

(*vi*) केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं के आधार पर उनकी काव्यात्मक विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए ।

(*vii*) अज्ञेय की काव्यभाषा पर विचार कीजिए ।

5. किन्हीं **दो** काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×7=14

(*i*) अगर मैं तुमको ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार न्हाई कुईं
टटकी कली चम्पे की वगैरह
तो नहीं कारण कि मेरा हृदय
उथला या कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है
बल्कि केवल यही : ये उपमान मैले हो गए हैं
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच ।

(*ii*) हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती
अमर्त्य वीर पुत्र हो
दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है
बढ़े चलो, बढ़े चलो ।

(*iii*) बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु
पूछेगा सारा गाँव बंधु,
वह हँसी बहुत कुछ कहती थी
फिर भी अपने में रहती थी
सबकी सुनती थी सहती थी
देती थी सबके दाँव बंधु ।

(*iv*) आज नदी बिल्कुल उदास थी ।
सोई थी अपने पानी में,
उसके दर्पण पर—
बादल का वस्त्र पड़ा था ।
मैंने उसको नहीं जगाया,
दबे पाँव घर वापस आया ।

(v) नौका से उठती जलहिलोर

हिल पड़ते नभ के ओरछोर

विस्फारित नयनों से निश्चल,

कुछ खोज रहे चल तारक-दल

ज्योतित कर नभ का अंतस्तल,

जिनके लघु दीपों को चंचल,

अंचल की ओट किये अविरल

फिरतीं लहरें लुकछिप पल-पल ।